पुरूशाथ की अवधारणा में निहित मूल्यों का अध्ययन

डॉ0 हिमांशु भोखर सिंह

पुरुषार्थ की अवधारणा मानव जीवन–दर्शन और जीवन पद्धति के रूप में एक ऐसी अवधारणा है जिसके अनुसार मनुष्य अपना जीवन जीता है तथा परिवार एवं समाज में विभिन्न कर्तव्यों का पालन करता है। यह ज्ञान, भावना, क्रिया की सम्पूर्णता के साथ लौकिक जीवन जीने के बाद भावी जीवन जीने की एक व्यवस्था है। पुरुषार्थ दो शब्दों के योग से बना है पुरुष + अर्थ। पुरुष का अर्थ मानव से है तथा अर्थ का तात्पर्य उद्देश्य से है। इस प्रकार यदि देखा जाए तो मानव का उद्देश्य समग्रतापूर्ण जीवन जीना है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ शब्द उद्योग को भी दर्शाता है एवं इस अर्थ में इसे उद्यमशीलता भी कहा जा सकता है। 'संस्कृत'–शब्दार्थ–कौस्तुभ' में भी पुरुषार्थ को इसी अर्थ के रूप में लिया गया है। इसमें बताया गया है कि (पुरुषार्थ) मनुष्य के जीवन का प्रधान उद्देश्य है जिसकी सिद्धि के लिए उन्हे उद्यम करना चाहिए। हिन्दू संस्कृति में चार पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष माने गये हैं जिसमें मोक्ष को ही सर्वोपरि माना गया है।